

|::^::| हंसलो मित्र कोनी थारो ए भोली काया |::^::|

हंसलो मित्र कोनी थारो ए, भोली काया हंसलो मित्र कोणी थारो ए
तू जाने काया में ठग राख्यो, हंसलो आप ठगोरो ए
भोली का हंसलो मित्र कोणी थारो ए.....

अमर लोक से आयो म्हारो हंसलो, आयो अखन कंवरो ए ।

ई हंसले ने ब्याव रचायो, यो ही है पीव तिहारो ए भोली काया ॥

काढ र ल्याई कढाकर ल्याई में तो, फिर फिर ल्याई उधारो ए ।

ई हंसले ने में तो भूखो कोणी राख्यो, सूप दियो घर सरो ए भोली काया ॥

जळ गया तेल या बुझ गई बाती, मंदिर भयो अंधियारों ए ।

ले दिवलो में तो घर घर डोली, मिल्यो कोनी तेल उधारो ए भोली काया ॥

दोय दिन नहीं तो यो च्यार दिन को पावणों, यो लाद चल्यो बिनजारो ए ।

तू कहवे तो हंसला संग चलूंगा, छोड़ चल्यो मझधारो ए भोली काया ॥

खिंड गई इट बिखर गयो चेजो, माटी में मिल गयो गारो ये ।

कहत कबीर सुणो भाई साधो, निकल गयो चेजारो ए भोली काया ॥

जय श्री नाथजी की....